शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ४ : नई दिल्ली : २१-२७ अप्रेल २०१७

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां बिहार प्रान्त में सानंद अहिंसा यात्रा करते हुए गतिमान हैं। बिहार प्रान्त की यात्रा अब परिसम्पन्नता की ओर है। २६ अप्रेल को भागलपुर में अक्षय तृतीया सम्पन्न कर पूज्यप्रवर आगामी ५ मई को झारखंड राज्य में प्रवेश करेंगे। ४ मई को आचार्यप्रवर का ५६वां जन्मोत्सव तथा ५ मई को पूज्यप्रवर का ८वां पट्टोत्सव समायोज्य है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण बिहार राज्य में

महानंद की दिशा में आगे बढ़ें

०७ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः परीऔना से महानंदपुर की ओर विहार किया। गत कई दिनों की भांति आज भी आकाश में बादल छाए हुए थे, किन्तु आज उनमें सघनता नहीं थी। इसलिए मौसम कुछ गर्मी का अहसास लिए रहा। परीऔना के ग्रामीणों ने समूहबद्ध रूप में पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष ग्रहण किया। मार्गवर्ती खेतों में की जा रही 'गन्ने' की खेती पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनी। आज के विहार पथ के आसपास पहाड़ भी अवस्थिति लिए हुए थे। पूज्यप्रवर के पावापुरी पदार्पण के संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों के लोग आज बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचने प्रारंभ हो गए। १५.० किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर महानंदपुर में पधारे। आदर्श मध्य विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में जैन वाङ्मय के संदर्भ में बाल, पंडित और बालपंडित--इन तीन शब्दों की व्याख्या करते हुए जीवन में त्याग-संयम के विकास की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज हम महानंदपुर आए हैं। आदमी सम्यक् दर्शन और पांडित्य को प्राप्त करे तो वह महानंद की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से महानंदपुरवासी जनता अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों से कृतसंकल्प बनी। आदर्श मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री आलोकजी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावभीनी अभिव्यक्ति दी।

महाचिकित्सक की भूमि पर चिकित्सकों के बीच आए हैं चिकित्सक

०८ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः महानंदपुर से पावापुरी की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर के पावापुरी पदार्पण के संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के आने का क्रम जारी था। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान अपने चरण थामकर बीकानेर निवासी स्व. मूलचंदजी बोथरा के पौत्र अभिरुचि और प्रपौत्र विनम्र से क्रमशः प्रतिक्रमण की एक पाटी और पच्चीस बोल का एक बोल सुना। गत कई दिनों से आचार्यप्रवर मार्ग में कुछ क्षण रुककर दोनों बालकों से पच्चीस बोल सुनते हैं। दोनों बालक पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी प्रस्तुति देने के लिए सोत्साह कंठस्थ कर रहे हैं। पूज्यप्रवर का यह अनुग्रह बोथरा परिवार के अन्य सदस्यों को भी हर्षाभिभूत बना देता है। करीब ७.५ किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर पावापुरी के बाहरी भाग में स्थित वर्द्धमान आयुर्विज्ञान संस्थान परिसर में पधारे। इस विशाल परिसर में स्थित अतिथि

गृह में आचार्यप्रवर का आज का प्रवास हुआ। आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रधानाध्यापक श्री जे.के. दास आदि शिक्षकों और विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आत्मा अमूर्त होती है, इसलिए वह इन्द्रियग्राही नहीं होती। पूरे आकाश में दो प्रकार के पदार्थ हैं--मूर्त और अमूर्त। इन दोनों में सारी दुनिया समाविष्ट हो जाती है। पदार्थों का दूसरा वर्गीकरण चेतन और अचेतन के रूप में भी किया जाता है। मूर्त-अमूर्त और चेतन-अचेतन ये दोनों वर्गीकरण अन्योन्य प्रविष्ट हो सकते हैं। आत्मा एक ऐसा तत्व है, जो अमूर्त है और चेतन है। आत्मा को इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता। शरीर मूर्त है, वह इन्द्रियग्राही होता है।

भगवान महावीर ने अमूर्त आत्मा का भी साक्षात्कार कर लिया था। आत्मा का साक्षात्कार इन्द्रियों से नहीं, आत्मा से किया। आत्मसाक्षात्कार अध्यात्म जगत में साधना की बहुत बड़ी निष्पत्ति होती है। भगवान महावीर ने लगभग साढ़े बारह वर्षों की विशेष साधना के बाद आत्मसाक्षात्कार किया। वे परम अर्हता संपन्न व्यक्तित्व थे। दुनिया में उनसे बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता, उनसे बड़ा कोई सिद्धयोगी नहीं हो सकता और उनसे बड़ा कोई आदमी नहीं हो सकता, यह हमारा अवधारित सिद्धान्त है। उन्होंने अहिंसा का केवल उपदेश ही नहीं दिया, अपितु उसे जीया भी। उन्हें परम अहिंसक महापुरुष कहा जा सकता है। उन्हें बहुत बड़ी शिष्य संपदा भी प्राप्त हुई। उनके शिष्य समुदाय में इंद्रभूति गौतम प्रमुखतम शिष्य थे। इंद्रभूति गौतम के रूप में महाविद्वान शिष्य प्रभु को प्राप्त हुआ। भगवान महावीर और इंद्रभूति गौतम का मानों कोई पूर्वजन्म का संबंध था। आज हम भगवान महावीर से जुड़े हुए कहे जाने वाले बिहार के पावापुरी क्षेत्र में आए हैं। जहां प्रभु ने नश्वर शरीर को हमेशा के लिए त्याग दिया, वह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

बीमार व्यक्ति के लिए चिकित्सक शरणस्थल होता है। उसे चिकित्सक से आशा होती है। हालांकि हमेशा बचा ही लेना चिकित्सक के भी हाथ की बात नहीं, किन्तु बचाने का प्रयास करना चिकित्सक का अपना धर्म होता है। चिकित्सक में सेवा भावना के साथ प्रमाणिकता होना महत्त्वपूर्ण होता है। एक व्यक्ति के पास लाखों रुपए हैं, किन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तो कितनी बड़ी कमी हो जाती है। उस कमी को दूर करने का प्रयास चिकित्सक वर्ग करता है।'

वर्द्धमान आयुर्विज्ञान संस्थान से संबद्ध प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'आयुर्विज्ञान संस्थान के विद्यार्थी मानों कि सेवा कार्य के लिए निर्मित होने वाले विद्यार्थी हैं। ये भावी चिकित्सक हो सकते हैं। मेरे ख्याल से आयुर्विज्ञान से जुड़े हुए चिकित्सा जगत में शरीर और मन की चिकित्सा की बात हो सकती है, किन्तु आत्मा की चिकित्सा की बात वर्तमान में संभव नहीं लग रही है। आत्मा के महाचिकित्सक भगवान महावीर हुए थे। हालांकि वे शरीर का भी संपूर्ण ज्ञान रखते थे, उनसे बढ़कर शरीर का ज्ञान किसी चिकित्सक को नहीं हो सकता। किन्तु उनका विषय मुख्यतः आत्मा था। वे आत्मा की चिकित्सा करने वाले थे। आत्मा का इलाज संभवतः वर्तमान मेडिकल कॉलेज से ऊपर की बात है। वह इलाज अध्यात्मशास्त्र के वेत्ता, साधक और गुरु कर सकते हैं। इस दृष्टि से हम लोग भी चिकित्सक हैं। यों मानना चाहिए कि आज चिकित्सकों/भावी चिकित्सकों के बीच चिकित्सक आए हैं। मानों हम लोग तो एक ही वर्ग के हैं। चिकित्सकों के साथ आज मानों चिकित्सक बैठे हैं। हां, कार्य क्षेत्र का भेद अवश्य है। हमारा कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से आत्मा और आप लोगों का कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से शरीर और मन हो सकता है। शरीर की चिकित्सा का भी बहुत महत्त्व है, किन्तु वह तो इस जीवन तक उपयोगी हो सकती है। आत्मा की चिकित्सा हो जाए तो वह अगले जन्मों तक भी उपयोगी हो सकती है। इसलिए शरीर की

चिकित्सा से आत्मा की चिकित्सा का अधिक महत्त्व हो जाता है। भगवान महावीर अध्यात्म जगत के महाचिकित्सक ही नहीं, चिकित्सकों के निर्माता भी थे। कितने-कितने आध्यात्मिक चिकित्सक उनके पास तैयार हुए होंगे।

अध्यात्म जगत में मूल रोग है--मोह। वह एक व्यापक तत्त्व है। गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ, काम आदि सारे रोग मोह परिवार के सदस्य हैं। मोह परिवार का इलाज करना अध्यात्म जगत की चिकित्सा होती है। ऐसा कहा जा सकता है कि अध्यात्म जगत में मोह रोग है। संसारी प्राणी रोगी हैं। भगवान महावीर, धर्मगुरु और साधु जगत चिकित्सक वर्ग है। अध्यात्म की साधना, सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र औषध है। कभी-कभी शारीरिक और मानसिक चिकित्सा करने वाले चिकित्सक स्वयं भावात्मक दृष्टि से रुग्ण हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें आध्यात्मिक चिकित्सा का सहारा लेना पड़ सकता है। हम साधुओं को शारीरिक चिकित्सा के लिए आप जैसे चिकित्सकों के पास आना पड़ सकता है तो आपको भावात्मक चिकित्सा के लिए हमारे पास आना पड़ सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी ने अणुव्रत और दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के माध्यम से आध्यात्मिक चिकित्सा का पथ बताया।

भगवान महावीर ने कितनी ध्यान साधना की। मानों उनके लिए तो भोजन आदि गौण और ध्यान-साधना मुख्य थी। ऐसे महासाधक, महान विभूति भगवान महावीर दुनिया को प्रकृति का अवदान था। ऐसी महान आत्मा की जन्मभूमि, कर्मभूमि, साधनाभूमि, ज्ञानभूमि और निर्वाण भूमि कहे जाने वाले क्षेत्र में हमारा विचरण हो रहा है।

आज हम पावापुरी आए हैं। जैन शासन में दीपावली पावापुरी से जुड़ी हुई है। भगवान महावीर का पावापुरी में आमवस्या को निर्वाण हुआ। उस उपलक्ष्य में प्रकाश किया गया। महाज्योति चली गई तो अन्य उपकरणों के माध्यम से प्रकाश किया गया। प्रकाशपर्व जैन शासन में भगवान महावीर से जुड़ा हुआ है। भगवान महावीर के संदेश को आत्मसात् कर हम दूसरों की भी आध्यात्मिक चिकित्सा कर सकें तो कल्याण का कार्य हो सकेगा।'

मेडिकल कॉलेज के प्रिन्सिपल श्री जे.के. दास ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से यह धरती और भी शुद्ध हो गई। प्रभु की पदरज पाकर हम अपने आप में गौरवान्वित हैं। आज बहुत खुशी का दिन है कि आचार्यश्री हमारे बीच आए हैं और अपने वचनों से हमें आशीर्वाद दिया है। बच्चो! यह अपूर्व दिन है कि हमें ऐसे महापुरुष का दर्शन इतने समीप से प्राप्त करने का सौभाग्य मिल रहा है। आचार्यश्री ने आज हमें बहुत अनुगृहीत किया है। कुछ दिनों पूर्व हमें आपके आगमन की सूचना मिली तो हम खुशियों में झूम उठे। मैं आपका यहां पधारने पर बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं।' आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा की अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर मेडिकल कॉलेज के प्रिन्सिपल आदि शिक्षक तथा विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल परिपार्श्वस्थ इमारत में मधुमक्खियों के अनेक छत्ते लगे हुए थे। मध्याह्न में मधुमक्खियां छिड़ गईं और श्रद्धालुओं पर आक्रमण-सा कर दिया। अनेकानेक लोग इस आक्रमण से आहत हुए। चूंकि पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल पर पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं को इस इमारत के निकट आना पड़ रहा था तो मधुमक्खियां यदा-कदा उन्हें काटती जा रही थीं। प्रवास स्थल के बाहर भी पचासों मधुमक्खियां मंडरा रही थीं। पूज्यप्रवर ने श्रद्धालुओं को हो रही परेशानी को देखते हुए चिंतनपूर्वक सांयकालीन विहार का निर्णय लिया और तदनुसार सूर्यास्त के आसपास वहां से प्रस्थान किया। मार्ग में

जलमंदिर और समवसरण मंदिर दूर से पूज्यप्रवर की दृष्टि के विषय बने। लगभग १.३ किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर पावापुरी स्थित श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ द्वारा संचालित श्री रसिकलाल एम. धारीवाल यात्रिक भवन में पधारे। आचार्यप्रवर का कल (आने वाले) का प्रवास पहले से यहीं निर्धारित था। उसके साथ आज का रात्रिकालीन प्रवास भी जुड़ गया। श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र पारसान आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। इस भवन में चारों ओर बने कमरों के बीच स्थित विशाल हॉल में सायं सात से आठ बजे के बीच सैंकड़ों-सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने शनिवार सामायिक की तो मनहर दृश्य उपस्थित हो उठा। आचार्यप्रवर के निर्देश के प्रति श्रावक समाज की जागरूकता को देखकर सीना गर्व से फूल रहा था।

जलमंदिर में ज्योतिचरण

०९ अप्रेल। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। भगवान महावीर की जन्म जयंती और भगवान महावीर निर्वाणभूमि के रूप में प्रतिष्ठित पावापुरी में पूज्यप्रवर के द्विदिवसीय प्रवास का दूसरा दिन। विभिन्न क्षेत्रों से समागत श्रद्धालुओं की विशाल उपस्थिति। चारों ओर उल्लासमय वातावरण। ऐसा लग रहा था मानों भगवान महावीर के निर्वाण दिवस दीपावली पर यहां होने वाला आयोजन हो रहा हो।

परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः प्रवासस्थल से भगवान महावीर के निर्वाण आदि से संबद्ध बताए जा रहे स्थानों के अवलोकनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर जलमंदिर की ओर पधारते हुए 'दादाबाड़ी' में पधारे। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर का भगवान महावीर के पार्थिव देह के अंतिम संस्कार स्थल रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त जलमंदिर में पदार्पण हुआ। चारों ओर जल सरोवर से घिरा हुआ वह स्थान रमणीयता भी लिए हुए था। कमलपत्रों से प्रायः पूरी तरह आच्छादित यह सरोवर प्राकृत सुषमा को लिए हुए था। पूज्यप्रवर सरोवर के बीच बने मार्ग से संगमरमर से निर्मित छोटे से मंदिर में पधारे। जलमंदिर परिसर में ऐतिहासिक अवगति देने की दृष्टि से अंकित शिलालेख के अनुसार--'इस मंदिर का निर्माण सर्वप्रथम भगवान महावीर के अग्रज राजा नंदीवर्धन ने ५२७ ई. पूर्व में करवाया था। जिसका जीर्णोद्धार समय-समय पर अनेक व्यक्तियों/संस्था द्वारा करवाया जाता रहा है। वर्तमान जलमंदिर कमल सरोवर के मध्य भाग में श्वेत संगमरमर से निर्मित एक अनुपम कलाकृति है। उसके उत्तर भाग में भव्य मेहरावी प्रवेश द्वार मंदिर तक पहुंचने का मार्ग है। यह बलुआ पत्थर का बना हुआ है। मंदिर के गर्भगृह में तीर्थंकर भगवान महावीर के चरणचिन्ह उत्कीर्ण हैं। बांये भाग में उनके प्रथम गणधर शिष्य इंद्रभूति गौतम एवं दांये भाग में पांचवें शिष्य गणधर सुधर्मा स्वामी के चरण उत्कीर्ण हैं।

जहां पर संगमरमर मंदिर है, वही वह मूल स्थल है जहां पर महावीर स्वामी का अंतिम संस्कार हुआ था। कहा जाता है कि भगवान के निर्वाण के समय यहां श्रावकों की इतनी भीड़ थी कि चुटकी-चुटकी भर उनकी चिता का भस्म लेने से ही यहां विशाल सरोवर बन गया। यह स्थान अपापापुरी के नाम से जाना जाता है।'

मंदिर के पुजारी ने आचार्यप्रवर के समक्ष अवगति प्रस्तुत करते हुए कहा--'भगवान महावीर के निर्वाण दिवस 'दीपावली' पर यहां मेला लगता है। रात्रि में जप आदि चलता है और फिर प्रातः चार बजे ५१ किलो का लड्डू यहां चढ़ाया जाता है। उस समय यहां रत्नजड़ित चरणचिन्ह और उस पर सोने का छत्र स्थापित किया जाता है।' इस मंदिर में भगवान महावीर आदि की कोई मूर्ति नहीं है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'महावीर तुम्हारे चरणों में...' गीत का आंशिक संगान कर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'भगवान महावीर के निर्वाण स्थल पावापुरी में आज उनकी जन्म जयंती का प्रसंग

है। उनकी साधना, दिव्य देशना और उनका उपदेश हमारे आत्मकल्याण के निमित्त बनें। हम उनके प्रति तथा गौतम स्वामी और सुधर्मा स्वामी जैसे उनके गणधर शिष्यों की आत्माओं के प्रति भी भक्ति के भाव प्रदर्शित करते हैं। हमारी आत्मा वीतरागता के पथ पर आगे बढ़ती रहे, यही मंगलकामना।' पूज्यप्रवर का जलमंदिर के परिपार्श्वस्थ दिगम्बर जैन कोठी में भी पधारना हुआ।

समवसरण मंदिर में महावीर के प्रतिनिधि ने दी देशना

तत्पश्चात पूज्यप्रवर पावापुरी के बाहरी भाग में स्थित समवसरण मंदिर पधारे। समवसरण के आकार में निर्मित इस मंदिर के स्थान को भगवान महावीर के देशना स्थल के रूप में जाना जाता है। मंदिर के बाहरी भाग में इस स्थान को प्रभु महावीर की प्रथम और अंतिम देशना की स्थली के रूप में दर्शाया गया है। पूज्यप्रवर ने यहां आसीन होकर मुनिवृन्द को आह्वान कर कुछ उपदेश प्रदान करते हुए कहा--

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तपस्या धर्म है। जिस आदमी का मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। हम धर्म के पथ पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहें। भगवान महावीर से संबद्ध बताए जाने वाले इस स्थान में हमारा आना हुआ है। प्रभु महावीर ने अपने जीवन काल में कितनी बार देशना दी होगी। हमारे सामने तो जैन आगम हैं। उन्हें हम यथौचित्य प्रभु की वाणी के प्रतिनिधि मानकर चलते हैं। आगम हमारे लिए सम्माननीय हैं। प्रभु महावीर के प्रति भक्तिभाव रखते हुए उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने का प्रयत्न काम्य है। प्रभु की निर्वाणभूमि कहलाने वाले क्षेत्र 'अपापा' या 'पावा' या 'पावापुरी' आना हुआ है। हम प्रभु के प्रति भक्तिभाव व्यक्त करते हैं। आचार्यप्रवर ने स्वरचित गीत 'म्हारै मन मंदिर में प्रभु महावीर है' का आंशिक संगान भी किया। आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन के अंत में घोष का समुच्चारण किया--'भगवान महावीर की'-'जय हो'--समुपस्थित जनता का प्रत्युत्तर में उभरा यह स्वर प्रभु महावीर और आचार्यप्रवर के प्रति उनकी भक्ति को दर्शा रहा था।

प्रभु महावीर निर्वाणभूमि पर गूंजा जयघोष

आचार्यप्रवर यहां से प्रस्थान कर प्रवास स्थल के समीपस्थ निर्वाण स्थल के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त श्वेताम्बर मंदिर परिसर में पधारे। पूज्यप्रवर मंदिर की कुछ सीढ़ियां चढ़कर एक सीढ़ी पर खड़े हो गए। यहां ऐतिहासिक अवगति देने के उद्देश्य से स्थापित शिलालेख के अनुसार--'मगध साम्राज्य की अपापापुरी नालंदा स्थित वर्तमान की 'पावा' पावन भूमि पर महाराज हस्तिपाल की रज्जुशाला में चौबीसवें तीर्थंकर वीतराग महावीर ने १६ प्रहर (४८ घंटे तक) तक अमृतवचनों की अखंड देशना देते हुए कार्तिक वदी अमावस्या के अंतिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र में दीपावली के दिन ७२ वर्ष की आयु में देह त्याग निर्वाण प्राप्त किया, तभी से दीपावली के अवसर पर कार्तिक वदी अमावस्या के दिन प्रभु के निर्वाण स्थल पावापुरी पर मेला लगता है। वीतराग प्रभु महावीर ने जिस स्थान पर मोक्ष प्राप्त किया था, वहां प्रभु की स्मृति में उनके अग्रज सम्राट नंदीवर्धन ने एक चबूतरा बनवाकर प्रभु के चरण चिन्ह स्थापित किए। कालांतर में उसी चबूतरे के स्थान पर विशाल मंदिर बनवाया गया एवं समय-समय पर उसका जीर्णोद्धार होता रहा।'

प्रतिष्ठित जैनागम 'उत्तरज्झयणाणि' को भगवान महावीर की अंतिम वाणी के रूप में भी माना जाता है। यदि यह स्थान वस्तुतः भगवान का निर्वाण स्थल है और उत्तराध्ययन प्रभु की अंतिम देशना है तो

पूज्यप्रवर ऐसे स्थान पर खड़े थे, जिसके आसपास उद्‌भूत वाणी न जाने कितनी बार पूज्यप्रवर के वचनों का विषय बन चुकी है।

'पज्जोसवणाकप्पो' के ८४ नंबर सूत्र में प्रभु के निर्वाण का वर्णन इस प्रकार है--**'पावाए निव्वाण-पदं।** तत्थ णं जेसे पावाए मज्झिमाए हत्थिपालगस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छिमं अंतरावासं वासावासं उवागए। तस्स णं अंतरावासस्स जेसे वासाणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे--कत्तियबहुले, तस्स णं कत्तियबहुलस्स पन्नरसी-पक्खेणं जासा चरिमा रयणी तं रयणिं च णं समणे भगवं महावीरे कालगए विइक्कंते समुज्जाए छिन्न-जाइ-जरा-मरण-बंधणे सिद्धे बुद्धे 'मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे' सव्वदुक्खपहीणे। चंदे नामं से दोच्चे संवच्छरे, 'पीतिवद्धणे मासे नंदिवद्धणे पक्खे' अग्गिवेसे नामं से दिवसे उवसमेत्ति पवुच्चइ, देवाणंदा नामं सा रयणी निरतित्ति पव्वुचइ, अच्चे लवे, मुहुत्ते पाणू, थोवे सिद्धे, नागे करणे, सव्वट्ठसिद्धे मुहुत्ते, साइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं कालगए विइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।।'

पूज्यप्रवर ने श्रीमज्जयाचार्य कृत चौबीसी के अंतिम गीत 'महावीर स्तुति' का आंशिक संगान करते हुए कहा--'यह स्थान प्रभु महावीर की निर्वाण स्थली के रूप में बताया जाता है। भगवान महावीर के निर्वाण के साथ एक महाज्योति ऊर्ध्वगमन कर गई। हम भी वीतरागता की प्राप्ति की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहें। प्रभु महावीर के चरणों में हम अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं। 'भगवान महावीर की'--'जय हो'--इस प्रकार पूज्यप्रवर द्वारा घोष के उच्चारण और जनता द्वारा सोत्साह प्रत्युत्तर देने का क्रम समवसरण मंदिर की भांति यहां भी रहा। पूज्यप्रवर करीब छह किलोमीटर का परिभ्रमण कर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

महावीर के निर्वाण स्थल में महावीर जयंती का भव्य एवं गरिमापूर्ण समायोजन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में महावीर जयंती के संदर्भ में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में दिगम्बर परंपरा के आचार्य शीतलसागरजी, मूर्तिपूजक परंपरा के अंतर्गत खरतरगच्छ के श्री जिनचन्द्रसूरीजी तथा स्थानकवासी परंपरा से संबद्ध आचार्य चन्दनाजी की शिष्या साध्वी शुंभजी की भी उपस्थिति रही, जिससे इस कार्यक्रम में चारों जैन समुदायों की झलक दृष्टिगोचर होने लगी। पूज्यप्रवर के पावापुरी पदार्पण के संदर्भ में देश-विदेश से समागत हजारों श्रद्धालु भी कार्यक्रम में सोत्साह उपस्थित थे। ऐसे में स्थान का अपर्याप्त सिद्ध होना स्वभाविक था। लोग ऊपरी तीनों मंजिलों के बरामदे (जिससे कार्यक्रम स्थल दृष्टिगोचर हो रहा था) में बैठ गए। मकान की संरचना और लोगों के बैठने का क्रम इस प्रकार बना कि अनायास समवसरण का-सा दृश्य उपस्थित हो गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री तनसुखलाल बैद व श्री मनोज बैंगानी ने गीत का संगान किया। डॉ. श्रेयांश जैन और नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा मंत्री श्री राजेश पटावरी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ व्यवस्थापक समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र पारसान ने पावापुरी में महावीर जयंती के आयोजन के संदर्भ में पूज्यचरणों में कृतज्ञ भाव अर्पित किए। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनिकुमारश्रमणजी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज का दिन प्रभु महावीर की स्तुति, स्मृति और प्राप्ति का दिन है। उन्होंने मानव जाति को बहुत कुछ दिया। साधना से केवलज्ञान को प्राप्त कर मानव जाति के उत्थान में उसका उपयोग किया। मनुष्य जाति के साथ उन्होंने तिर्यंच जाति के प्राणियों का भी उद्धार किया। हम ऋजुता और समर्पण के द्वारा उनकी स्मृति और स्तुति कर रहे हैं और प्रभु के संदेशों को आत्मसात कर उनकी प्राप्ति कर सकते हैं।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज हम परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में

भगवान महावीर जयंती मना रहे हैं। उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं और युगीन समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हैं। प्रभु की वाणी हमारे लिए पथप्रदर्शक है। हम उस पर चलकर अपना और दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। मेरा नाम महावीर है और मैं श्रमण भी हूं। आज आचार्यप्रवर ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि मैं भी महावीर की तरह अपना उद्धार करूं।'

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने संभाषण में कहा--'आज हम महावीर के निर्वाण स्थल पर भगवान महावीर का जन्म महोत्सव मना रहे हैं। भगवान महावीर के विषय में आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से यदा-कदा सुनते रहें हैं, वे एक दिन में महावीर नहीं बने। अपने दृढ़ संकल्प द्वारा वर्षों की साधना के बाद वे महावीर बने। भयंकर कष्टों में भी वे कभी विचलित नहीं हुए। प्रबल संकल्पशक्ति के कारण उनमें समता, ऊर्जा, मैत्री और करुणा पूर्णरूपेण साकार हो गई। आज हम उनका स्मरण ही नहीं, उनका अनुसरण करते हुए महावीर बनने की दिशा में प्रस्थान करें।'

आचार्य चन्दनाजी की शिष्या साध्वी शुभंजी ने कहा--'आज से करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व एक ज्योतिपुंज का अवतरण हुआ। आज हम महावीर के प्रथम समवसरण स्थल पर महावीर जयंती मनाने के लिए श्रद्धा-भक्ति के साथ उपस्थित हैं। लोग इतनी बड़ी संख्या में आए हैं, किन्तु वाहनों में बैठ कर आए हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी पांव-पांव चलकर कितने-कितने कष्टों को झेलकर महावीर की भूमि बिहार में विहार कर रहे हैं और आज भगवान महावीर जयंती मनाने के लिए पावापुरी में विराजित हैं। भगवान महावीर की जन्मभूमि में मतैम्य नहीं है, किन्तु भगवान की निर्वाण भूमि पावापुरी ही है, इसमें कोई मतभेद नहीं है। आज हम इस पावन भूमि पर महावीर जयंती मनाकर परम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। हम भी उनकी भांति अनंत को प्राप्त करें, यही मंगलकामना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पर महावीर जयंती मनाई जा रही है। पावापुरी की इस भूमि पर महावीर ने अपनी प्रथम व अंतिम देशना दी। वे आप्त थे, जो सत्य को सही रूप में जानता है और उसे सही रूप में निरुपित करता है, वह आप्त होता है। आप्त बनने के लिए राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करनी होती है। भगवान महावीर साढ़े बारह वर्षों तक साधना करने के बाद राग-द्वेष विजेता बने, आप्त बने। उनका जीवन आज भी दुनिया को आलोक बांट रहा है। अपेक्षा है उस आलोक से हम स्वयं के जीवन को प्रकाशित करें। भगवान महावीर ने महाव्रत और अणुव्रत के रूप में जीवनाचार का मार्गदर्शन दिया। हिंसा और अनैतिकता के इस दौर में वह मार्गदर्शन और भी प्रासंगिक है। भगवान महावीर ने जो दृष्टि और सत्य दिया, उसे जानें और समझें ही नहीं, अपितु उसे हृदयंगम करने का प्रयास भी करें। वे आचार के प्रवक्ता के साथ-साथ प्रयोक्ता भी थे। उन्होंने कितने-कितने प्राणियों को बोधि प्रदान की। उनका जीवन इतना विराट है कि उसे शब्दों में समेटा नहीं जा सकता। आचार्यश्री महाश्रमण भगवान महावीर की भांति जन-जन को जीवनाचार सिखाने के लिए अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा के संकल्प जीवनाचार के संकल्प हैं। आज हम आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में महावीर जयंती मना रहे हैं। हम महावीर के संदेश के अनुरूप अपने जीवन को बनाकर तथा उनके दर्शन को जन-जन तक पहुंचाकर सही रूप में महावीर जयंती मना सकते हैं।'

मूर्तिपूजक खरतरगच्छ के श्रीपूज्यजी जिनचंद्रसूरिजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आज के इस आयोजन में बड़ा उत्साह दिख रहा है। प्रभु महावीर जयंती को हम सभी जन्म कल्याणक रूप में मनाते हैं। क्योंकि उन्होंने अपने जन्म का सार्थक उपयोग किया और ऐसा कार्य किया कि उन्हें पुनः जन्म नहीं लेना पड़ा। उन्होंने हम सभी को जीना सिखाया। शासन श्रृंगार स्वरूप युगपुरुष

आचार्यप्रवर महाश्रमणजी विराजमान हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी ने आपश्री को जब अपना उत्तराधिकारी बनाया तो मुझे भी उस पल का साक्षी बनने का सुअवसर मिला। तेरह सिद्धान्तों की मजबूत नींव पर तेरापंथ संघ अवस्थित है। आज यहां प्रभु महावीर की जन्मजयंती को उत्साह के साथ मनाने का सबसे महत्त्वपूर्ण अवदान आचार्यश्री महाश्रमणजी का है। तेरापंथ धर्मसंघ जैन शासन का प्रमुख अंग है और बिना तेरापंथी बने भगवान महावीर के पथ पर नहीं चला जा सकता। जहां मेरेपन का नामो-निशान नहीं होता वहां तेरापंथ का उदय होता है। इसी प्रकार प्रभु के पथ पर चलने के लिए दिगम्बर, स्थानकवासी और मूर्तिपूजक बनना भी आवश्यक होता है। निर्लेप बनकर दिगम्बर, अपने मूल स्थान की खोज कर स्थानकवासी और मन-मंदिर में प्रभु की मूरत बिठाकर मूर्तिपूजक बना जा सकता है। प्रभु महावीर जयंती के ऐसे भव्य आयोजन के लिए मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी का बहुत-बहुत आभारी हूं।'

महावीर का स्मरण ही नहीं, अनुसरण भी करें

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में चार चीजें श्रेष्ठ बताई गईं। पहली बात--दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। अनेक प्रकार के दान चलते हैं। अन्नदान, वस्त्रदान, ज्ञानदान आदि। दूसरी बात--सत्यों में अनवद्य सत्य श्रेष्ठ है। सत्य भी निष्पाप होना चाहिए। तीसरी बात--तपस्या में ब्रह्मचर्य उत्तम तप होता है। चौथी बात--लोक में श्रमणज्ञात पुत्र श्रेष्ठ है। मुझे ऐसा लगता है कि प्रभु महावीर ने प्राणियों को अभयदान दिया, इसलिए उन्हें श्रेष्ठ कहा गया। उन्होंने कितने-कितने प्राणियों को प्रतिबोध दिया। उन्हें वैज्ञानिक कहा गया, किन्तु मेरे मन में आया उनके लिए यह शब्द बहुत छोटा है। उनके लिए सर्वज्ञानिक शब्द प्रयुक्त किया जा सकता है। उन्होंने संपूर्ण सत्य का साक्षात्कार किया, इसलिए वे लोकोत्तर हैं। उनकी इन्द्रिय संयम की साधना भी पूर्णरूपेण सधी हुई थी, इसलिए वे लोकोत्तम हैं।

जैन समाज भगवान महावीर के प्रति कितना श्रद्धाभाव रखता है। और भी लोग उनके प्रति श्रद्धा भाव रखते होंगे, किन्तु जैन शासन के तो वे महानायक हैं। हम उनके शासन में साधना कर रहे हैं, ऐसा कहा जा सकता है। जैन शासन से जुड़े लोगों या भगवान महावीर के अनुयायियों को यह ध्यान देना चाहिए कि उनमें अहिंसा की साधना कितने अंशों में है। मांसाहार से विरमण रहता है या नहीं। पैकेटबंद पदार्थों में लाल चिन्ह वाले पदार्थों का परहेज है या नहीं? जिन पदार्थों या औषध या कैप्शूल आदि में मांस का मिश्रण है या वैसी संभावना हो, उनसे परहेज है या नहीं? मदिरापान से विरक्ति है या नहीं। शादी आदि के अवसर पर शराब का आसेवन तो नहीं हो रहा है ना?

रात्रि भोजन पूरा छोड़ सकें तो बहुत अच्छी बात हो सकती है, किन्तु पूरा न छोड़ सकें तो इतना भी कर लें कि रात्रि दस बजे के बाद भोजन नहीं करेंगे। यदि इतना भी हो जाए तो संयम का कुछ विकास हो सकता है। संवत्सरी पर्व/अनंतचतुर्दशी पर उपवास होता है या नहीं? अपने-अपने मान्य दिन पर उपवास की साधना होती है या नहीं? इस पर जैन शासन के अनुयायियों का ध्यान रहना चाहिए। प्रातःकाल कुछ खाने से पहले नमस्कार महामंत्र का जप होना चाहिए। अपने व्यापार आदि में यथासंभव ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए। अनगार साधु-साध्वियों के दर्शन, सेवा और प्रवचन श्रवण का लाभ लेने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार कुछ बातों पर ध्यान दिया जाए तो जैन शासन या भगवान महावीर के अनुयायी होने का और अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है।

आज परम प्रभु महावीर की जन्म जयंती है। यह तेरापंथ प्रभु का पंथ है। वीतरागता का पंथ तेरापंथ है। हम इस पर बढ़ते रहें। इस पथ के प्रति हम श्रद्धावान बने रहें। महावीर जयंती से भीतर में कुछ प्रेरणा

स्फुरित हो सके तो और भी अच्छी बात हो सकती है।

आप लोग अगली महावीर जयंती तक यदि एक संकल्प कर सकें कि रात्रि में दस बजे के बाद सूर्योदय तक सामान्यतया यथासंभव भोजन (दवा-पानी के सिवाय) नहीं करेंगे। पूरा रात्रि भोजन छोड़ सकें तो बहुत अच्छी बात हो सकती है। यदि वह संभव न हो तो रात्रि दस बजे के बाद भोजन नहीं करने का संकल्प भी ले सकते हैं। (आचार्यप्रवर के आह्वान पर समुपस्थित विशाल जनमेदिनी पूज्यप्रवर द्वारा बताए गए संकल्प को ग्रहण हेतु समुद्यत हो गई। पूज्यप्रवर द्वारा उच्चरित भाषावली को दोहराकर जनता कृतसंकल्प बनी। संकल्प की भाषा इस प्रकार है--'हम संकल्प करते हैं कि अगली महावीर जयंती के सूर्योदय तक रात्रि दस बजे के बाद सूर्योदय तक विशेष स्थिति के सिवाय भोजन नहीं करेंगे।')

पावापुरी में महावीर जयंती का आयोजन हो रहा है। आचार्यश्री शीतलसागरजी से पहले भी मिलना हुआ और आज पुनः मिलना हो गया, अच्छा है। श्रीपूज्यजी महाराज से कई वर्षों बाद मिलना हुआ है, पावापुरी में सहज योग मिल गया। अमरमुनिजी महाराज से संबंधित साध्वीजी भी आ गई थी। इस प्रकार अच्छा योग मिल गया।

श्रीपूज्यजी महाराज ने कोलकाता स्थित अपने केन्द्र में आने का निमंत्रण दिया। आप जब वहां रहेंगे, तब हमारा भी वहां आने का विचार है। भले आधा घंटा के लिए ही, एक बार वहां आने का विचार है। आचार्यप्रवर ने उन्हें अपने चतुर्मास स्थल पर आने के लिए कहा तो वे बोले--'हां, मैं जरूर आऊंगा।'

प्रभु महावीर से विभिन्न रूपों में जुड़े हुए इस बिहार प्रान्त में हमारी यात्रा हो रही है। आज उनकी जन्म जयंती पर उनका स्मरण करने का अवसर मिला। प्रभु महावीर के संदेश को स्वयं आत्मसात भी करें और उसे प्रसारित करने का यथोचित यथासंभव प्रयत्न करें, यह हमारे लिए काम्य है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के प्रथम अनुशास्ता महामना आचार्य भिक्षु हुए। उन्होंने अपनी मेधा से भगवान महावीर के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया। उन्हीं की परंपरा में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। उन्होंने आगम संपादन का जो कार्य किया, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह कार्य अभी भी चल रहा है। इस कार्य के द्वारा प्राचीन जैन वाङ्मय को जनभोग्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जैन शासन के आचार्य व साधु-साध्वियां स्वयं की साधना भी अच्छी तरह करते रहें और साथ में दूसरों को अहिंसा, संयम और तप का संदेश देते रहें, ताकि जनता में आत्मकल्याण का कार्य हो सके।

पावापुरी में भगवान महावीर जयंती का समायोजन हो रहा है। आज प्रातः मैं भगवान महावीर से जुड़े हुए बताए जा रहे अनेक स्थानों में गया। हम भगवान महावीर का स्मरण करें। उनकी शरण में रहें और अहिंसा आदि सिद्धान्तों को आत्मसात कर उनका अनुसरण भी करें तो महावीर जयंती को मनाना हमारे लिए और ज्यादा सार्थक हो सकेगा।'

सूर्य को क्या दीपक दिखाउं

दिगम्बर परंपरा के आचार्यश्री शीतलसागरजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज का प्रसंग बहुत ही आनंददायी है। यह प्रसंग प्रत्येक अहिंसा प्रेमी को हर्षित बनाने वाला है। हम आज एक परम पवित्र आत्मा की जन्म जयंती मना रहे हैं। आचार्यश्री हजारों किलोमीटर की यात्रा करते हुए भगवान महावीर की निर्वाण भूमि में पहुंचे हैं। आचार्यश्री अहिंसा, नैतिकता, शांति, सद्भावना और नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं। मेरा आज यहां आने का मन नहीं था। मैंने आयोजकों से कहा था कि आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे सूरज के सामने मुझ जैसा दीपक क्या करेगा। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अभी आपको संकल्प करवाया। छोटे-छोटे संकल्पों से भी जीवन में कितना बदलाव हो सकता है। प्रभु महावीर के निर्वाण हुए ढ़ाई हजार सालों से

भी ज्यादा समय हो गया, फिर भी उस महापुरुष की जन्म जयंती पूरे विश्व में मनाई जाती है। यह उनकी लोकप्रियता का प्रतीक है। आप लोग महावीर को मानते हैं, पर महावीर की नहीं मानते। भगवान महावीर ने जो संदेश दिया, उसे अपनाकर हम अपने जीवन को समुन्नत बना सकते हैं।

मुझे संभव नहीं लग रहा था कि मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी से इतने कम अंतराल में दुबारा मिलना हो जाएगा। आज पुनः मिलकर बहुत खुशी हुई। मेरे जन्म होने के दो साल पहले आचार्यश्री महाश्रमणजी दीक्षित हो गए थे। आप इतने दीर्घकालीन अनुभव के साथ साधना करते हुए जन-जन की चेतना में जागृति का संचार कर रहे हैं। मैं कामना करता हूं कि ऐसे महापुरुष से पुनः-पुनः मिलना होता रहे। आपकी अहिंसा यात्रा एक दिन बहुत विशाल रूप धारण करे। जैसे गंगोत्री से निकलने वाली गंगा पतली-सी धारा होती है, किन्तु आगे जाकर वह गंगासागर बन जाती है। उसी प्रकार दिल्ली से प्रारम्भ होने वाली यह यात्रा दक्षिण में जाकर विशाल सागर का रूप धारण करे।' महावीर जयंती के भव्य एवं गरिमापूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अनुग्रहवृष्टि में अभिस्नात होकर गद्‌गद् हुआ मूर्तिपूजक परिवार

आज सायंकालीन आहार के बाद बिहारशरीफ का मूर्तिपूजक संचेती परिवार पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचा। उस समय आचार्यप्रवर के कक्ष में गृहस्थों का प्रवेश निषिद्ध था। उस परिवार की एक प्रौढ़ महिला ने प्रवास कक्ष के मुख्य द्वार से पूज्यप्रवर को निवेदन किया--'आपके दर्शन और आपसे बात करने की मेरी तीव्र इच्छा है।' आचार्यप्रवर उस परिवार पर अनुग्रह करते हुए स्वयं मुख्य द्वार पर पधार गए। आचार्यप्रवर की इस कृपा में अभिस्नात परिवार भावविभोर हो उठा। वह बहन बोली--'मेरा पीहर, ननिहाल और ससुराल तीनों ही मूर्तिपूजक परिवार में हैं, किन्तु मेरे मन में आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आपके प्रति अपार श्रद्धा है। मैं जब पांच-छह वर्ष की थी, तब कोलकाता में आचार्य तुलसी का जुलूस निकला था। उसमें बहुत भीड़ थी। हम लोग आचार्य तुलसी के दर्शन के लिए तीन-चार घंटे खड़े रहे थे। तब से मैं तेरापंथ धर्मसंघ से बहुत प्रभावित हूं। गुरुदेव ने उस परिवार को मंगलपाठ सुनाकर पूछा--'अब तो संतुष्ट हो ना?' उस महिला सहित परिवार के सभी सदस्यों ने गद्‌गद् स्वर में पूज्यचरणों में कृतज्ञता अर्पित की।

आज एक जैनेतर व्यक्ति ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'मैं आपके दर्शन के लिए आया था। मुझे आपका साहित्य बहुत अच्छा लगा। मैंने कुछ साहित्य लिया है। कल आप चले जाएंगे, किन्तु आपका साहित्य मुझे आपकी स्मृति करवाता रहेगा। मैं आपके दर्शन कर धन्य हो गया। भगवान महावीर की यह धरती आपके आगमन से और ज्यादा पवित्र हो गई।'

पुनः आराध्य की निर्वाण स्थली और स्मारक स्थली में

१० अप्रेल। द्विदिवसीय प्रवास के उपरान्त आचार्यप्रवर ने पावापुरी से नालंदा की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर प्रवास स्थल समीपस्थ भगवान महावीर के निर्वाणस्थल कहे जाने वाले श्वेताम्बर मंदिर के निकट पधारे और मंदिर की कुछ सीढ़ीयां चढ़ने के उपरान्त एक सीढ़ी पर खड़े होकर कुछ क्षण ध्यान किया, तदुपरान्त आचार्यप्रवर वहां से प्रस्थित हुए। कुछ कदम आगे बढ़कर आचार्यप्रवर ने अचानक अपने चरण थामे और उद्‌घोष किया--'भगवान महावीर की'--'जय हो'--उपस्थित श्रद्धालुओं ने इस प्रत्युत्तर के साथ अपनी भावांजलि अर्पित की।

पूज्यप्रवर वहां से प्रस्थान कर प्रभु महावीर के पार्थिव देह के अंतिम संस्कार स्थल के रूप में प्रतिष्ठित 'जलमंदिर' में पधारे और वहां आंगन पर आसीन होकर कुछ क्षण ध्यान किया, तदुपरान्त मंदिर के बाहरी

भाग में आसीन होकर आचार्यप्रवर ने फरमाया--'प्रभु महावीर निर्वाणवादी थे। पावापुरी क्षेत्र उनके निर्वाण से जुड़ा हुआ बताया जाता है। वे वीतराग पुरुष थे। उनसे संबद्ध कहलाने वाले स्थान में आकर हम ऐसी प्रेरणा प्राप्त करें कि हम भी निर्वाण की दिशा में बढ़ने के लिए वीतरागता के पथ पर बढ़ते रहें। 'भगवान महावीर की'--'जय हो'--पूज्यप्रवर द्वारा उच्चरित घोष का प्रत्युत्तर देकर उपस्थित जनता प्रफुल्लित थी।

विहार के दौरान नालंदा सैनिक स्कूल के शिक्षक और विद्यार्थियों ने मार्ग के परिपार्श्व में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ. प्रमोदजी ने बताया कि केन्द्र सरकार द्वारा संचालित इस विद्यालय में विद्यार्थियों को शारीरिक और मानसिक रूप में सैनिक बनने की दिशा में आगे बढ़ाया जाता है। पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की। आज के विहार पथ में काफी घुमाव थे। इस कारण आतप बरसाने वाला सूर्य कभी दांयी ओर तो कभी पीछे की ओर दृष्टिगोचर हो रहा था। कुछ वेग के साथ बह रही हवा आतप से आहत राहगीरों को राहत प्रदान कर रही थी। करीब १३.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर नालंदा स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पधारे। आज सांयकाल तक प्रवास यहीं हुआ।

नवनालंदा महाविहार में प्रभावक कार्यक्रम का समायोजन

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम नव नालंदा महाविहार (समविश्वविद्यालय) में समायोज्य था। पूज्यप्रवर प्रातराश के उपरान्त करीब १.४ किमी की यात्रा कर वहां पधारे। संस्थान के रजिस्ट्रार श्री सुनील प्रसाद सिन्हा आदि ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित नवनालंदा महाविहार परिसर में स्थित आचार्य नागार्जुन संकाय भवन में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रारंभ में बौद्ध भिक्षु धम्मगिरिजी ने बौद्ध धर्म की प्रार्थना प्रस्तुत की। रजिस्ट्रार श्री सुनील प्रसाद सिन्हा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। संस्थान के पूर्व निदेशक व वरिष्ठ प्रोफेसर श्री उमाशंकर व्यास ने पूज्यप्रवर के समक्ष खाता (उत्तरीय) प्रस्तुत किया। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने अहिंसा यात्रा एवं आचार्यप्रवर के विषय में अवगति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में ज्ञान का परम महत्त्व है। ज्ञान के समान के दूसरी कोई पवित्र चीज नहीं है। आज पूरे विश्व में कितने-कितने शिक्षा संस्थान खड़े हैं। वहां विद्या की आराधना होती है। विद्या की आराधना होना ही विद्या संस्थान का प्राण है। अन्यथा मात्र भौतिक भवन से क्या होगा। जैसे शरीर में प्राण का महत्त्व है, वैसे ही विद्या संस्थानों में विद्या की आराधना प्राण होती है। विभिन्न विषय अधीत किए जाते हैं। धार्मिक विषयों और अन्य विषयों का भी अध्ययन-अध्यापन चलता है। विभिन्न विद्याओं में अध्यात्म विद्या भी एक विद्या है। विद्या संस्थानों में और विषय पढ़ाए जाते होंगे। उसके साथ अध्यात्म विद्या न पढ़ाई जाए तो संभवतः कुछ कमी रह सकती है। जिन विद्या संस्थानों का विषय ही धर्म और अध्यात्म हो, उनका तो कहना ही क्या। वहां प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को सहजयतया आध्यात्मिक माहौल मिल सकता है।

ज्ञान का पहला स्थान है। उसके बाद आचरण का स्थान है। ज्ञान प्राप्त करने के बाद सदाचरण को अपनाना चाहिए। ज्ञान का सार है आचार। हिंसा त्याज्य है--यह ज्ञान होने के बाद उससे बचने का भी प्रयास करना चाहिए। दो शब्द आते हैं--ज्ञपरिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा। ज्ञपरिज्ञा अर्थात जान लेना और प्रत्याख्यान परिज्ञा का मतलब है गलत कार्य और अकरणीय कार्य को छोड़ देना। जीवन में ज्ञान और आचार दोनों आ जाते हैं तो परिपूर्णता आ सकती है।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--साधना में संकल्प का महत्त्व है। कोरे सपने पूरे न भी हों, संकल्प पूरे हो सकते हैं। केवल सपने से क्या होगा। उसके साथ दृढ़ इच्छाशक्ति से संकल्प का अभ्यास और तदुनुरूप

प्रयास हो तो सफलता मिल सकती है।

हम अभी भगवान महावीर और भगवान बुद्ध से जुड़ी हुई कही जाने वाली भूमि पर विचरण कर रहे हैं। जैन और बौद्ध--श्रमण परंपरा की दो धाराएं हैं। हमारा अनेक बार बौद्ध धर्म से जुड़े व्यक्तित्वों से मिलना होता है। आज हमारा नवनालंदा महाविहार में आना हुआ है। आप लोगों से मिलना हुआ है। हम लोग स्वयं अध्यात्म की आराधना करते हुए दूसरों के कल्याण में अपना योगदान देते रहें।'

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त जिज्ञासा-समाधान का उपक्रम रहा, जिसमें विश्वविद्यालय से संबंधित अनेक वरिष्ठ लोगों ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी विभिन्न विषयक जिज्ञासाएं रखीं। आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त सटीक समाधान प्रश्नकर्ताओं को तो संतुष्ट बना ही रहे थे, उन्हें सुनकर अन्य प्रबुद्ध व्यक्ति भी प्रभावित हो रहे थे। यही कारण रहा कि समय सम्पन्न हो गया, किन्तु समुपस्थित लोगों की जिज्ञासाएं सम्पन्न नहीं हुई। आखिर यह कहकर इस क्रम को रोका गया कि 'आप लोग पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल में उपस्थित होकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।' (जिज्ञासा समाधान पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में)

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित लोगों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प भी स्वीकार किए। पालि विभाग के डॉ. विश्वजीत कुमार ने पूज्यप्रवर के प्रति आस्थासिक्त कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने इस विश्वविद्यालय में प्राकृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता जताते हुए आचार्यप्रवर से इस संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय से संपर्क में रहने के लिए कहा। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेकानेक प्रबुद्ध व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम के बाद भी प्रबुद्ध लोगों और जन सामान्य के बीच जिज्ञासा-समाधान के अंतर्गत पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त समाधान प्रभाव रूप में चर्चा के विषय रहे। उपरान्त पूज्यप्रवर चिलचिलाती धूप में नवनालन्दा महाविहार से १.४ किमी यात्रा कर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

आज सायंकाल मुनि कुमारश्रमणजी आचार्यप्रवर के पावन सन्निधि में पहुंचे और करीब सवा दो किमी दूर स्थित गणधर गौतम, गणधर अग्निभूति और गणधर वायुभूति की जन्मस्थली कहे जाने वाले कुण्डलपुर में रात्रि प्रवास करने हेतु अनुमति प्रदान करने हेतु निवेदन किया। आचार्यप्रवर ने कुछ चिंतनपूर्वक फरमाया--'हम भी वहां चलें।' तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और कुछ संतों से परामर्श कर विहार का निर्णय कर दिया। तदनुसार करीब सवा पांच बजे पूज्यप्रवर ने प्रवास स्थल से विहार किया।

प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष का अवलोकन

आचार्यप्रवर मार्ग के बांयीं ओर स्थित नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष स्थल पर पधारे। भारतीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा संरक्षित इस संस्थान में लगे एक शिलालेख के अनुसार--'छठी शताब्दी ई.पू. में भगवान महावीर एवं बुद्ध के काल से ही नालंदा की ऐतिहासिकता के प्रमाण प्राप्त होते हैं। बुद्ध के परम प्रिय शिष्यों में एक सारिपुत्र के जन्म एवं निर्वाण स्थल के रूप में भी इसे जाना जाता है। प्राच्यकला और संस्कृति के विख्यात शिक्षा संस्थान व महाविहार के रूप में इसकी पहचान पांचवी शती में स्थापित हुई। जब चीन सहित अनेक सुदूरवर्ती देशों से बौद्ध भिक्षु ज्ञानार्जन हेतु यहां आते थे। इस संस्थान से जुड़े विद्वानों में नागार्जुन, आर्यदेव, वसुबन्धु, धर्मपाल, सुविष्णु, असंग, शीलभद्र, धर्मकीर्ति, शान्तिरक्षित इत्यादि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त प्रसिद्ध चीनी यात्रियों ह्वेन स्यांग एवं इत्सिंग के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने अपने यात्रा वृतांत में नालंदा के महाविहारों, मंदिरों तथा भिक्षुओं की जीवनचर्या आदि का विशद वर्णन किया है।

धर्मशास्त्र, व्याकरण, तर्कशास्त्र, खगोलिकी, तत्त्वज्ञान, चिकित्सा एवं दर्शनशास्त्र आदि इस शिक्षा केन्द्र में अध्ययन के प्रमुख विषय थे। अभिलेखनीय प्रमाणों के अनुसार समकालीन शासकों द्वारा दान दिये गये अनेकों ग्रामों के राजस्व से इन महाविहारों का व्यय वहन किया जाता था।

प्राचीन युग के एक महानतम विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित नालंदा महाविहार की स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम (४१३-४५५ई.) द्वारा की गई थी। कन्नौज नरेश हर्षवर्धन (६०६-६४७ई.) व पूर्वी भारत के पाल शासकों (८वीं-से-१२वीं शती) के समय में भी महाविहारों को राज-प्रश्रय अनवरत प्राप्त होता रहा। यद्यपि इस महान शिक्षा संस्थान का क्रमिक ह्रास परवर्ती पाल शासकों के समय से ही प्रारम्भ हो चुका था, किन्तु लगभग १२०० ई. में बख्तियार खिलजी के आक्रमण के परिणाम स्वरूप नालंदा की कीर्ति पूर्णतः धरती के गर्भ में समा गई।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कराये गए उत्खनन (१९१५-३७ तथा १९७४-८२) से यहां ईंट निर्मित छह मंदिरों एवं ग्यारह विहारों की सुनियोजित श्रृंखला अनावृत हुई, जिनका विस्तार एक वर्ग किलोमीटर से भी अधिक है। लगभग तीस मीटर चौड़े उत्तर-दक्षिण पथ के पश्चिम में मंदिरों की व पूर्व में विहारों की श्रृंखला है। आकार व विन्यास में सभी विहार लगभग एक जैसे हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संरचना दक्षिणी छोर पर स्थित मंदिर संख्या ३ है, जिसमें निर्माण के सात चरण हैं। इसके निकट छोटे आकार के मनौती स्तूपों का एक विशाल समूह है।'

अन्य स्रोत से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस विश्वविद्यालय में किसी समय लगभग डेढ़ हजार अध्यापक और करीब दस हजार विद्यार्थी थे। इस संख्या से विश्वविद्यालय के तत्कालीन महत्त्व को भी समझा जा सकता है। बताया गया कि उस समय राज्य की ओर से करीब १०० गांवों की आय विश्वविद्यालय के लिए दे दी गई थी। जिससे पर्याप्त मात्रा में चावल, मक्खन, दूध आदि खाद्य पदार्थ विश्वविद्यालय को मिल जाते थे। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश इतना आसान न था। तीव्र बुद्धि वाला विद्यार्थी ही इसकी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर पाता, किन्तु प्रवेश के बाद उसके अध्ययन, भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि का प्रबंध विश्वविद्यालय की ओर से ही किया जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी देन भारतीय न्यायशास्त्र तथा प्रमाणशास्त्र के रूप में विकसित हुई। मिथिला के ब्राह्मणों और नालंदा विश्वविद्यालय के बौद्धों के बीच चले परस्पर खंडन-मंडन के बौद्धिक संघर्ष से भारतीय न्याय और प्रमाण विद्या जिस रूप में विकसित हुई, वह अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

पूज्यप्रवर इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेषों का अवलोकन कर रहे थे। करीब छह से बारह फुट चौड़ी दीवारों से यह अनुमानित हो रहा था कि इनके आधार पर निर्मित भवन कितने विशाल रहे होंगे और चौड़ी व पक्की सीढ़ियों के भग्नावशेष इसकी ऊंचाई अनुमानित करवा रहे थे। पूज्यप्रवर ने अनेक विहारों के भग्नावशेषों का अवलोकन किया। आचार्यप्रवर की सेवा में चलने वाले गाइड ने विभिन्न कक्षों, स्तूपों आदि के भग्नावशेषों के विषय में अवगति प्रस्तुत की।

गणधर गौतम आदि तीन गणधरों की जन्मभूमि में

पूज्यप्रवर नालंदा विश्वविद्यालय का अवलोकन करने के उपरान्त सूर्यास्त के आसपास कुण्डलपुर (नालन्दा) स्थित जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ कुण्डलपुर द्वारा संचालित धर्मशाला में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। इस परिसर में बने तीन मंदिरों में से पुराने मंदिर में गणधर गौतम के पदचिन्ह स्थापित हैं। अन्य गणधरद्वय के चरणचिन्ह भी यहां स्थापित हैं। इस स्थान को गणधरत्रयी के जन्मस्थल के रूप में बताया जाता है। इस गांव का प्राचीन नाम गुरुर-गुब्बर या गोबर ग्राम बताया गया।

यहां से करीब दो किलोमीटर दूर स्थित कुण्डलपुर को दिगम्बर आम्नाय की एक परंपरा भगवान महावीर का जन्मस्थल मानती है। आज सायंकालीन विहार की कुल दूरी २.३ किमी रही।

प्राचीन ऐतिहासिक नगर 'राजगृह' में तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता

११ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कुण्डलपुर (नालन्दा) से राजगीर की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान सिलाव बाजार और सीमा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। मार्ग में जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री बी.के. प्रसाद ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। उनके निवेदन पर पूज्यप्रवर ने एक मुनिजी को उनके विद्यालय में जाकर विद्यार्थियों को प्रेरणा देने का निर्देश दिया। तदनुसार विद्यार्थियों को प्रेरणा प्राप्त हुई। राजगीर (राजगृह) जैनों एवं बौद्धों के लिए ऐतिहासिक नगर के रूप में प्रतिष्ठित है। मार्ग के परिपार्श्व में यत्र-तत्र दर्शनीय और ऐतिहासिक स्थलों के संदर्भ में लगे दिशादर्शक बोर्ड इस नगर के प्रति राज्य सरकार की सजगता और पर्यटकों के आकर्षण को दर्शा रहे थे। इस नगर में आकर जैनागमों में बार-बार प्रयुक्त 'रायगिहे' नाम की अनायास स्मृति हो सकती है। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था' 'तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं। परिसा निग्गया' 'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! रायगिहं नयरिं'--आदि अनेक रूपों में राजगृह नगर का उल्लेख जैनागमों में मिलता है।

श्वेताम्बर कोठी से संबंधित लोगों की बलवती प्रार्थना पर आचार्यप्रवर करीब १.५ किमी का चक्कर लेकर श्वेताम्बर कोठी में पधारे। राजगृह बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनि सुव्रत स्वामी की च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं कैवल्य भूमि के रूप में भी जाना जाता है। श्वेताम्बर कोठी में मुनि सुव्रत स्वामी के मंदिर के बाहर आसीन होकर पूज्यप्रवर ने श्रीमज्जयाचार्य रचित चौबीसी के बीसवें गीत 'प्रभुजी आप प्रबल बड़भागी' गीत का आंशिक संगान किया। वहां पर लगे एक शिलालेख में राजगृह का ऐतिहासिक महत्त्व दर्शाया गया है, उसके अनुसार--'प्राचीन इतिहास में राजगृही का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में वैभव सम्पन्न एक विशाल नगरी के रूप में इस राजगृही का इतिहास उपलब्ध है। जैन साहित्य में राजगृही के कई नाम मिलते हैं-जैसे गिरिव्रज, क्षिति, प्रतिष्ठ, वसुमती, चणकपुर, ऋषभपुर, कुशाग्रपुर, राजगृह एवं राजगिरि। मगधदेश की यह राजधानी थी। भगवान महावीर एवं गौतमबुद्ध की यह विचरण भूमि थी। जैन साहित्य में एवं आगमग्रंथों में जिनका नामोल्लेख प्राप्त होता है, वे ऐतिहासिक विभूतियां श्रेणिक महाराजा, कौणिक, मौर्यवंशी चंद्रगुप्त, कौशल्य, अशोक, पुष्पमित्र, अग्निमित्र, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, अभयकुमार, जंबूस्वामी, धन्नाजी, शालिभद्र, मेघकुमार, मेतार्यमुनि, पूणिया श्रावक, सुलसा श्राविका आदि राजगृही नगरी के निवासी थे।

महामंत्री श्री अभयकुमार ने यहीं जैनी दीक्षा ली थी। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को यहीं उद्यान में केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था। शालिभद्र और धन्नाजी ने सात मंजिल का महल छोड़ दीक्षा लेकर यहीं वैभारगिरि पर अनशन कर आत्मकल्याण साधा था। भगवान महावीर के आदेश से भगवान के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी जी ने इसी नगरी के बाहर उद्यान में श्रेणिक महाराजा को 'श्रीपाल मयणा' का जीवन वृत्तांत व नवपद का महात्म्य सुनाया था। १२वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी की कठोर तपस्या का प्रथम पारणा इसी भूमि पर हुआ था।

भगवान महावीर ने चौदह चतुर्मास राजगृह एवं निकटस्थ नालन्दा में किये थे। श्री गौतम स्वामी आदि ग्यारह गणधरों का मोक्ष इसी भूमि पर हुआ था। यहां विपुलागिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, स्वर्णगिरि और वैभारगिरि--ये पांच पर्वत स्थित होने से राजगृही को पंचशैल भी कहते हैं।

२०वें तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामी भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये चार कल्याणक यहां हुए हैं।

पूज्यप्रवर श्वेताम्बर कोठी से पुनः मुख्य मार्ग पर पधारे। आचार्य चन्दनाजी की शिष्या साध्वी शुभंजी ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। मार्ग के दोनों ओर अनेकानेक मंदिर आदि दर्शनीय और ऐतिहासिक स्थल दृष्टिगोचर हो रहे थे। मार्ग के बांयी ओर स्थित ब्रह्मकुंड के विषय में बताया गया कि उसमें हर समय गर्म पानी उपलब्ध रहता है। स्थित पूज्यप्रवर १८.५ किमी का प्रलम्बर विहार कर राजगीर के वैभारगिरि पर्वत की तलहटी में बसे वीरायतन में पधारे। इस परिसर के संतोकषा दुर्लभजी अतिथिगृह में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए।

साध्वी शुभंजी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज इस पावन धरा पर आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है। आचार्यश्री को देखकर गौरव की अनुभूति होती है कि जिन शासन की प्रभावना के लिए कितना कठोर परिश्रम कर रहे हैं। आचार्यश्री! मेरी एक शिकायत है कि आपने हमें एक ही दिन क्यों दिया। आप एक दिन और प्रदान करें तो हमारे लिए यह अमृतवर्षा होगी। आपने यहां पधारकर बहुत कृपा की, हम अनुगृहीत हैं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में आसक्ति एक ऐसा तत्त्व है जो अपराध में धकेल सकता है। पदार्थों और व्यक्ति के प्रति आसक्ति हमारे लिए त्याज्य होती है। आसक्ति का पूर्ण परित्याग करना आसान नहीं है, किन्तु लक्ष्य बन जाए और अभ्यास चले तो अनासक्ति का अभ्यास किया जा सकता है। काम आसक्तिमान संकल्प पर आधारित होता है। अनासक्ति की साधना पूर्णांश में न हो सके तो बहुलांश और अल्पांश में तो हो सकती है। ऐसा लगता है कि अनासक्ति की साधना प्रदीप्त होती है तो पवित्र प्रेम, पवित्र मैत्री और यथार्थपूर्ण व्यवहार अपने आप जीवन में प्रयुक्त हो सकता है।

भगवान महावीर ने आसक्ति का मूलोच्छेद किया था। राजघराने में वैभवपूर्ण माहौल में जन्म लेने और पलने-पुसने वाला व्यक्ति वैभव को ठुकरा दे, कितनी बड़ी बात होती है। जम्बू स्वामी में भी किस प्रकार अनासक्ति का भाव पुष्ट हो गया। जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी के उत्तराधिकारी थे। कहा जाता है कि उन्होंने मोक्ष का द्वार बंद कर दिया। इसे यों माना भी जा सकता है कि अनासक्ति की, अध्यात्म की जो साधना जम्बू स्वामी ने की, उस साधना को करने वाला उनके बाद कोई हुआ नहीं। इसलिए उनके बाद कोई भरत क्षेत्र से मोक्ष में नहीं जा पा रहा है।

आज हम लोग राजगीर आए हैं। आगम में राजगृह का उल्लेख मिलता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी यहां पधारे थे। आचार्य महाप्रज्ञजी भी उस समय मुनि रूप में साथ थे। राजगृह एक ऐतिहासिक क्षेत्र रहा है। राजगीर में आचार्य चंदनाजी से जुड़े हुए इस वीरायतन में आज हमारा प्रवास हो रहा है। आचार्य चंदनाजी अनेक बार मिल चुकी हैं। पटना भी उनका आना हुआ था। वीरायतन और उपाध्याय अमरमुनिजी के बारे में मैं छोटा था, तब से यदा-कदा सुनता था, किन्तु संभवतः मैंने कभी उपाध्यायजी को देखा नहीं। उनकी अपनी चिंतनशीलता थी। जैन शासन में ऐसे अनेक व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने चिंतन, साधना और ज्ञान से कुछ प्राप्त किया है और प्राप्त कराने का भी प्रयास किया है। आज यहां आकर वीरायतन को कुछ देख लिया। आचार्य चन्दनाजी और उनकी सहवर्ती टीम खूब अच्छा आध्यात्मिक, धार्मिक कार्य करती रहें। वीरायतन भी आध्यात्मिक विकास करता रहे। राजगृह से तो कितने-कितने व्यक्तियों का संबंध

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

रहा है। भगवान महावीर के नाम से जुड़े हुए इस संस्थान में सेवा कार्य भी चलता है। यहां साधना का भी अच्छा क्रम चलता रहे।

गुरुदेव तुलसी के समय जैन विश्वभारती की परिकल्पना हुई। जैन विश्वभारती भी ज्ञान, सेवा आदि से संबंधित अनेक प्रवृतियों से जुड़ा हुआ संस्थान है। संभवतः ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय जैन शासन की बड़ी उपलब्धि है। वह ज्ञान, शोध आदि के लिए मान्यता प्राप्त व्यवस्थित केन्द्र है। जैन विश्वभारती क्रमशः विकसित हुई है और विकास कर रही है। देश-विदेश के ज्ञानार्थियों और शोधार्थियों के लिए वह अच्छा स्थान है। जैन शासन में ज्ञान का महत्त्व है तो साधना और सेवा का भी बड़ा महत्त्व है।

भगवान महावीर की विहरण भूमि और अन्य दृष्टियों से भी ऐतिहासिक कहलाने वाले राजगीर में हमारा आना हुआ है। आगम में भी बार-बार 'रायगिहे' शब्द प्राप्त होता है। हम सभी साधना और ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हुए दूसरों को भी आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ाने का प्रयास करें।'

श्री निर्मल नाहटा ने पूज्यप्रवर के राजगीर पदार्पण के संदर्भ में पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यप्रवर ने वीरायतन परिसर में स्थित 'श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्' (म्युजियम), 'नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम्' (आंखों का अस्पताल) आदि का अवलोकन किया।

अद्भुत है आपका संकल्पबल

गत ३१ मार्च को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उत्तर क्षेत्र के प्रान्त प्रचारक श्री बजरंगलाल गुप्ता, अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्री स्वान्त रंजन तथा बिहार-झारखंड क्षेत्रीय प्रचारक श्री रामदत्तजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर का उनके साथ लम्बा वार्तालाप हुआ। वार्तालाप के दौरान गुप्ताजी बोले--'आचार्यश्री! आपके दर्शन करने की मेरी बहुत इच्छा रहती है। इस बार कुछ लंबे अंतराल से आपके दर्शन हुए। मैं पटना आया हुआ था तो समाचार पत्र देखकर ज्ञात हुआ कि आप पटना ही हैं। मैंने कार्यकर्ताओं से संपर्क किया और मुझे दर्शन का सौभाग्य मिल गया। गुप्ताजी आगे प्रसंगवश बोले--'आचार्यश्री! आप जब काठमांडू में थे तब वहां आए भूकंप के बाद मेरे पास मुम्बई से समाचार आया कि आपको भारत में लाने के लिए वायुयान की व्यवस्था करनी है। मैंने भारत की विदेशमंत्री सुषमा स्वराज से तुरंत बात की तो वे बोली--'यदि आचार्यश्री के लिए वायुयान की आवश्यकता है तो भारत सरकार विशेष वायुयान की व्यवस्था अवश्य करेगी।' उसके बाद मैंने काठमांडू संपर्क किया तो पता चला कि आपने कहा है कि हम पैदल यात्रा ही करेंगे, किसी वायुयान, वाहन आदि का प्रयोग नहीं करेंगे।' आचार्यश्री! यह कितनी बड़ी बात है। आपका संकल्पबल अद्भुत है।' आचार्यप्रवर की उनसे विभिन्न राष्ट्रीय विषयों पर भी लम्बी वार्ता हुई।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार, पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)

शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ७२५८०६९६८७, ७२५८०६९५४५

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी